शोध मंथन Vol. XIII No.III July-Sept. 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.783 (SJIF)

जनपद बागपत में भूमि उपयोग प्रतिरूप में परिवर्तन का भौगोलिक अध्ययन

प्राप्तिः 27.08.2022
स्वीकृतः 17.09.2022

69

डा० स्वाती कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग
महामना मालवीय महाविद्यालय
खेकडा, बागपत (उ०प्र०)
ईमेलः *swatitomar2008@gmail.com*

सारांश

भूमि उपयोग भौगोलिक अध्ययन का एक प्रमुख पक्ष है। अध्ययन क्षेत्र जनपद बागपत उत्तर के विशाल मैदान का एक अंग है, यह एक प्रमुख कृषि प्रधान क्षेत्र है। जनपद बागपत में कुल प्रतिवेदित क्षेत्र 134983 हेक्टेयर है , जिसमे शुद्ध कृषित भूमि 79.49 प्रतिशत है। प्रस्तुत शोधपत्र में वर्ष 2009 से 2019 के मध्य वन, अन्य अकृश्य भूमि, परती भूमि, कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि तथा कृषि योग्य बंजर एवं कृषि अयोग्य भूमि में परिवर्तन का अध्ययन किया है। जनपद बागपत में कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि में वृद्धि दर सबसे अधिक (19.64þ) है तथा अन्य अकृष्य भूमि, वन व कृषि योग्य बंजर एवं कृषि अयोग्य भूमि में भी वृद्धि दर धनात्मक है। जबकि शुद्ध कृषित भूमि तथा परती भूमि के क्षेत्र में वृद्धि दर ऋणात्मक है। तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या एवं भूमि का कृषि के अतिरिक्त अन्य कार्यों में तेजी से उपयोग के कारण मानव भूमि अनुपात दिनोंदिन कम होता जा रहा है। अध्ययन क्षेत्र में ऊसर, बंजर, अनुपजाऊ एवं परती भूमि को कृषि तकनीकी प्रयोग के द्वारा कृषि क्षेत्र को बढ़ाया जा सकता है।

मुख्य बिन्दु

कृषि भूमि, भूमि उपयोग, प्रतिरूप, प्रतिवेदित क्षेत्र।

प्रस्तावना

भूमि किसी देश या प्रदेश के लोगों का जीवन स्तर एवं आय तथा देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देती है। सामान्यता भूमि शब्द का अर्थ मिट्टी से लगाया जाता है जिसका संबंध खेतों, चरागाह, जंगलों आदि से होता है तथा जो कृषि उत्पादन के साधन के रूप में प्रयुक्त होती है। किसी क्षेत्र की भूमि का प्रभाव उस क्षेत्र की कृषि के साथ–साथ उद्योगों के विकास पर भी पड़ता है तथा किसी भी क्षेत्र में औद्योगिकरण, नगरीकरण, जनसंख्या वृद्धि, कृषि का बदलता स्वरूप आदि का प्रभाव उस क्षेत्र के भूमि उपयोग के स्वरूप पर पड़ता है। इस प्रकार मानव व भूमि में घनिष्ठ सम्बन्ध पाया जाता है। भूमि उपयोग का तात्पर्य है कि भूमि को किन–किन प्रयोग में लाया जा रहा है अर्थात भूमि का एक निश्चित भाग किन किन कार्यों में प्रयोग हुआ है। सामयिक भूमि उपयोग के स्वरूप में परिवर्तन होता रहता है। भूमि उपयोग से संबंधित शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य ऐसे सिद्धांतों का निरूपण करना है जो भूमि उपयोग के यथोचित नियमन प्रस्तुत कर सकें वर्तमान समय में हमारे देश

में जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिकरण, नगरीकरण, विनिर्माण कार्य, कृषि का बदलता स्वरूप आदि के कारण भूमि उपयोग के स्वरूप में तेजी से परिवर्तन हो रहा है।

अध्ययन क्षेत्र

जनपद बागपत उत्तर के विशाल मैदान का ही एक अंग है जो कि यमुना एवं हिंडन नदी के दोआब में स्थित है। इसके उत्तर में शामली व मुजफ्फरनगर, दक्षिण में गाजियाबाद, पूरब में मेरठ तथा पश्चिम में यमुना नदी हरियाणा राज्य से बागपत की सीमा बनाती है। यह मेरठ से 50 किलोमीटर तथा दिल्ली से 40 किलोमीटर दूर स्थित है। जनपद बागपत का सृजन 1997 में किया गया था इससे पहले यह मेरठ जिले की तहसील था। यह एक मैदानी क्षेत्र है जिस की समुद्र तल से औसत ऊंचाई 218 मीटर है। जनपद एक सघन कृषि का मैदानी क्षेत्र है यहां की मिट्टी उपजाऊ है जिसमें गेहूं गन्ना चावल आदि मुख्य फसलें हैं। जनपद बागपत का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 1321 वर्ग किलोमीटर है। 2011 की जनगणना के अनुसार बागपत जनपद की कुल जनसंख्या 1303048 है, जिसमें 1028023 ग्रामीण जनसंख्या तथा 275025 शहरी जनसंख्या है। वर्ष 2011 में बागपत जनपद का जन घनत्व 986 तथा साक्षरता प्रतिशत 72.0 है। बागपत जनपद में कुल 3 तहसील (बड़ौत, बागपत, पिलाना) है तथा यहां कुल 6 विकासखंड (बागपत, बड़ौत, बिनौली, छपरौली, खेकड़ा व पिलाना) है। वर्ष 2019–20 तक बागपत में कुल ग्रामों की संख्या 315 है जिसमें आबाद ग्रामों की संख्या 290 तथा गैर आबाद ग्रामों की संख्या 25 है जनपद बागपत की जलवायु मोटे तौर पर मानसूनी जलवायु का प्रतिनिधित्व करती है यहां वार्षिक वर्षा लगभग 110 सेंटीमीटर तक होती है तथा लगभग 75 से 90þ वर्षा इसी ऋतु में ही होती है।

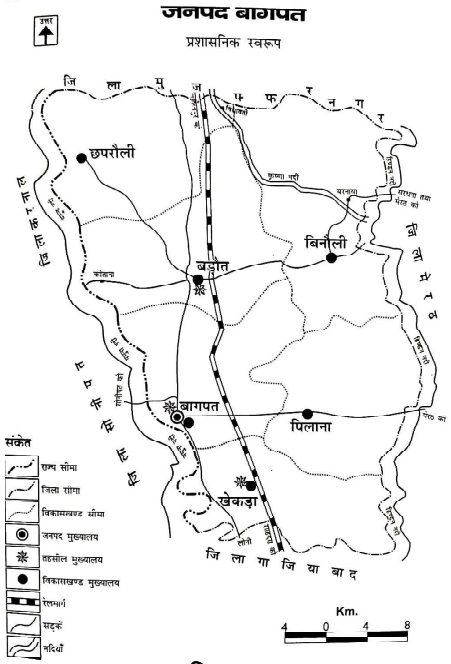

मानचित्र–01

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 2008– 09 से वर्ष 2018–19 तक होने वाले भूमि उपयोग के स्वरूप में परिवर्तन का अध्ययन करना है। अध्ययन के कुछ मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग के स्वरूप में परिवर्तन का अध्ययन करना।
2. जनपद बागपत के विकास खंडों के भूमि उपयोग स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

प्रस्तुत शोध पत्र में भूमि उपयोग के स्वरूप में परिवर्तन से संबंधी निम्न परिकल्पना की पूर्ति की जाएगी –

1. जनसंख्या वृद्धि के कारण भूमि उपयोग के स्वरूप में परिवर्तन हो रहा है।
2. कृषि में तकनीकी विकास के कारण कृषि भूमि उपयोग में परिवर्तन हो रहा है।
3. शैक्षिक और तकनीकी विकास के कारण कृषि भूमि का उपयोग गैर कृषि कार्य में अधिक हो रहा है।

विधि तंत्र

प्रस्तुत अध्ययन मुख्य रूप से द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। साथ ही क्षेत्रीय अवलोकन द्वारा प्राथमिक आंकड़ों का संग्रह किया गया है। भूमि उपयोग से संबंधित आंकड़े जिला सांख्यिकी पत्रिका जनपद बागपत से संकलित किए गए हैं। विश्लेषण हेतु भूमि को वन, अन्य अकृष्य भूमि, परती भूमि, कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि एवं शुद्ध कृषि भूमि की श्रेणियों में विभक्त कर अध्ययन किया गया है। आंकड़ों को प्रदर्शित करने के लिए आरेख तथा डायग्रामों का प्रयोग किया गया है।

आर्थिक स्वरूप

जनपद बागपत में कुल प्रतिवेदित क्षेत्र 834983 हेक्टेयर है जिसमें 79.49 प्रतिशत शुद्ध बोया गया क्षेत्र है तथा 66987 हेक्टेयर एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्र है। अध्ययन क्षेत्र की फसल सघनता 162.43 है। कुल मुख्य कर्मकरो में कृषक 33.62 प्रतिशत, कृषि श्रमिक 14.78 प्रतिशत, पारिवारिक उद्योग 4.17 प्रतिशत तथा अन्य 47.43 प्रतिशत है। जनपद बागपत में पंजीकृत कारखाने 43 तथा लघु औद्योगिक इकाइयां 73 हैं। यहां कुल सड़कों की लंबाई 1888 किलोमीटर है एवं लोक निर्माण विभाग द्वारा सघृंत सड़कों की लंबाई 397 किलोमीटर है। रेल मार्ग की लंबाई 47 किलोमीटर है। बैंकिंग सुविधाओं की दृष्टि से राष्ट्रीय कृत बैंक शाखाएं 115 अन्य 31 ग्रामीण बैंक शाखायें, 09 सहकारी बैंक शाखायें, 18 सहकारी कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक की शाखाएं 02 है।

भूमि उपयोग का स्वरूप

जब भूमि का उपयोग मानव अपनी आवश्यकता अनुसार करता है तो उस भू–भाग के लिए भूमि उपयोग शब्द का प्रयोग उचित होगा अर्थात भूमि उपयोग में भूभाग का प्राकृतिक स्वरुप क्षीण हो जाता है तथा मानवीय क्रियाओं का योगदान महत्वपूर्ण हो जाता है तथा माननीय क्रियाओं का योगदान महत्वपूर्ण हो जाता है तभी इसे भूमि उपयोग की संज्ञा देते हैं। तिवारी आर सी और सिंह

बी एन (1998) कृषि भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद। भूमि उपयोग का कालिक एवं स्थानिक अध्ययन करने के लिए निम्नलिखित भागों में विभाजित किया गया है –

1– वनों के अधीन भूमि नंबर
2– अन्य अकृषय भूमि
3– परती भूमि
4– कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि
5– कृषि योग्य बंजर एवं कृषि अयोग्य भूमि
6– शुद्ध कृषि भूमि

तालिका 01: जनपद बागपत में भूमि उपयोग का स्वरूप 2009–2019

भूमि उपयोग के वर्ग	2008–09		2018–19		कुल परिवर्तन	
	हेक्टेयर	प्रतिशत	हेक्टेयर	प्रतिशत	हेक्टेयर	प्रतिशत
वन	1525	1.13	1629	1.21	104	6.82
अन्य अकृष्य भूमि	191	0.14	220	0.16	29	15.18
परती भूमि	3452	2.56	2340	1.73	–1112	–32.21
कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	16006	11.86	19150	14.19	3144	19.64
कृषि योग्य बंजर एवं कृषि अयोग्य भूमि	4227	3.13	4339	3.21	112	2.65
शुद्ध कृषित भूमि	109593	81.18	107305	79.49	–2288	–2.09
कुल प्रतिवेदित क्षेत्र	134994	100.00	134983	100.00	–11	– 3.49

जिला सांख्यिकी पत्रिका जनपद बागपत 2010–2020

तालिका 01 का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि जनपद बागपत में वर्ष 2008–09 में कुल प्रतिवेदित क्षेत्र 134994 हेक्टेयर था जो वर्ष 2018–19 में 134983 हेक्टेयर हो गया जिसमें –3. 49 प्रतिशत की गिरावट दर्ज हुई। वर्ष 2008–09 में जनपद बागपत वनों के अंतर्गत क्षेत्र 1.13 प्रतिशत, अन्य कृषि भूमि का क्षेत्र 0.14 प्रतिशत, परती भूमि का क्षेत्र 2.56 प्रतिशत, कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि का क्षेत्र 11.86 प्रतिशत, कृषि योग्य बंजर एवं कृषि अयोग्य भूमि का क्षेत्र 3.13 प्रतिशत, शुद्ध कृषित भूमि 109593 हेक्टेयर थी जो कुल प्रतिवेदित क्षेत्र का 81.18 प्रतिशत थी। वर्ष 2018–19 में कुल प्रतिवेदित क्षेत्र 134983 हेक्टेयर है जिसमे वनो का क्षेत्रफल 1.21 प्रतिशत, अन्य अकृष्य भूमि का क्षेत्र 0.16 प्रतिशत, परती भूमि का क्षेत्र 1.73 प्रतिशत, कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि 14.19 प्रतिशत, कृषि योग्य बंजर एवं कृषि अयोग्य भूमि का क्षेत्र 3.21 प्रतिशत, शुद्ध कृषित भूमि 107305 हेक्टेयर है जो कुल प्रतिवेदित क्षेत्र का 79.49 प्रतिशत है।

वर्ष 2008–09 से 2018–19 तक जनपद बागपत में कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि में वृद्धि दर सर्वाधिक (19.64 þ) तथा परती भूमि के क्षेत्र में वृद्धि दर ऋणात्मक (–32.21) रिकॉर्ड की गई।

आकृति–1

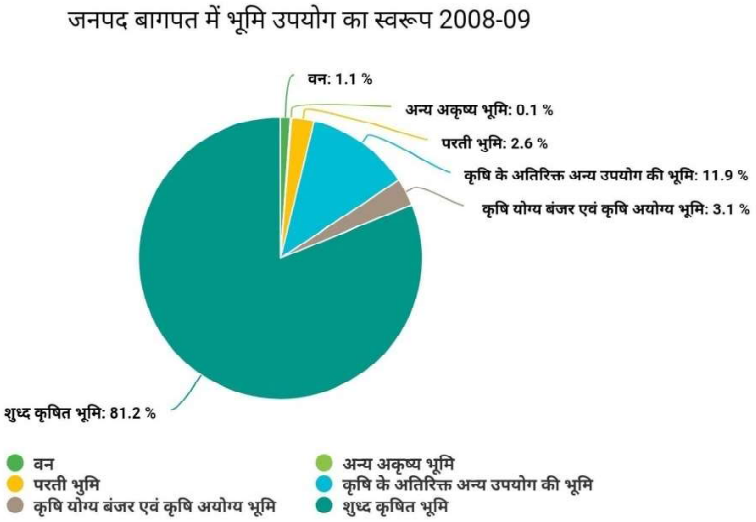
जनपद बागपत में भूमि उपयोग का स्वरूप 2008-09
वन: 1.1 %
अन्य अकृष्य भूमि: 0.1 %
परती भुमि: 2.6 %
कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि: 11.9 %
कृषि योग्य बंजर एवं कृषि अयोग्य भूमि: 3.1 %
शुध्द कृषित भूमि: 81.2 %
वन
परती भुमि
कृषि योग्य बंजर एवं कृषि अयोग्य भूमि
अन्य अकृष्य भूमि
कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि
शुध्द कृषित भूमि

आकृति–2

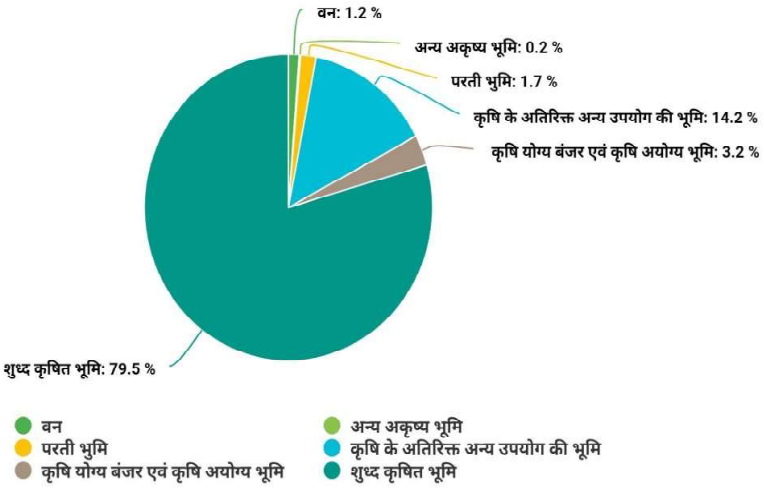
जनपद बागपत में भूमि उपयोग का स्वरूप 2018-19
वन: 1.2 %
अन्य अकृष्य भूमि: 0.2 %
परती भुमि: 1.7 %
कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि: 14.2 %
कृषि योग्य बंजर एवं कृषि अयोग्य भूमि: 3.2 %
शुध्द कृषित भूमि: 79.5 %
वन
परती भुमि
कृषि योग्य बंजर एवं कृषि अयोग्य भूमि
अन्य अकृष्य भूमि
कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि
शुध्द कृषित भूमि

तालिका 02 : जनपद बागपत में भूमि उपयोग का स्वरूप 2008–09 (हेक्टेयर में)

विकासखंड	वन	अन्य अकृष्य भूमि	परती भूमि	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	कृषि योग्य बंजर एवं कृषि अयोग्य भूमि	शुद्ध कृषित भूमि	कुल प्रतिवेदित क्षेत्र
छपरौली	96	20	262	1955	1273	16756	20362
बड़ौत	86	15	373	2657	534	21024	24693
बागपत	190	24	379	2488	698	16749	20528
पिलाना	333	18	403	1973	326	17222	20375
खेकड़ा	151	40	458	2178	762	13385	16974
बिनौली	578	42	1194	2818	401	19558	24591
जनपद	1525	191	262	16006	4227	109593	134994

जिला सांख्यिकी पत्रिका जनपद बागपत 2010

तालिका 03: जनपद बागपत में भूमि उपयोग का स्वरूप 2018–19(हेक्टेयर में)

विकासखंड	वन	अन्य अकृष्य भूमि	परती भूमि	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	कृषि योग्य बंजर एवं कृषि अयोग्य भूमि	शुद्ध कृषित भूमि	कुल प्रतिवेदित क्षेत्र
छपरौली	132	40	273	2162	790	16633	20030
बड़ौत	186	30	296	3220	658	200067	24457
बागपत	203	26	332	3257	624	16433	20875
पिलाना	358	33	351	2273	594	16740	20349
खेकड़ा	188	26	343	2464	670	13187	16878
बिनौली	442	32	565	3473	585	19757	24852
जनपद	1628	220	2340	19150	4339	107305	134983

तालिका 04: जनपद बागपत में भूमि उपयोग के स्वरूप में परिवर्तन 2008–09 से 2018–19 तक (प्रतिशत में)

विकासखंड	वन	अन्य अकृष्य भूमि	परती भूमि	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	कृषि योग्य बंजर एवं कृषि अयोग्य भूमि	शुद्ध कृषित भूमि	कुल प्रतिवेदित क्षेत्र
छपरौली	37.50	100.00	4.20	10.59	–37.94	–0.73	–1.63
बड़ौत	132.50	100.00	–20.64	21.19	23.22	–4.55	–0.95
बागपत	6.84	8.33	12.40	30.91	–10.64	–1.89	1.69
पिलाना	07.51	83.33	–12.90	15.21	82.20	–2.80	0.13
खेकड़ा	24.50	–35.00	–25.11	13.04	–12.07	–1.48	0.57
बिनौली	–23.53	–23.80	–52.68	23.24	45.89	1.02	1.07
जनपद	6.82	15.18	–32.21	19.64	2.65	–2.09	0.008

जैसा कि उपयुक्त तालिकाओं का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2008–09 में सबसे अधिक वन क्षेत्र बिनौली (578 हे0) विकासखंड में था जो 2018–19 तक घटकर (442 हे0) हो गया। इस प्रकार बिनौली विकासखंड में वृद्धि दर ऋणात्मक (– 23.65þ) रही। वर्ष 2008–09 सबसे कम वन क्षेत्र बड़ौत (86 हे0) विकासखंड में था जबकि वर्ष 2018–19 में सबसे कम वन क्षेत्र छपरौली (132 हे0) विकासखंड में रिकॉर्ड किया गया। वर्ष 2008–09 से 2018–19 के मध्य वन क्षेत्र में बिनौली विकासखंड के अतिरिक्त सभी विकास खंडों में वृद्धिदर धनात्मक रही।

अन्य अकृष्य भूमि

अन्य अकृष्य भूमि के अधीन चरागाह उद्यान वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्र सम्मिलित होता है। यह क्षेत्र शुद्ध बोए गए क्षेत्र में नहीं आता है। जनपद बागपत में अन्य अकृष्य भूमि का विकासखंडवार अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि वर्ष 2008–09 मे सबसे अधिक अन्य अकृष्य भूमि बिनौली (42 हे0) विकासखंड में और सबसे कम अन्य अकृष्य भूमि बड़ौत (15 हे0) विकासखंड में थी। जबकि वर्ष 2018–19 में सबसे अधिक अन्य अकृष्य भूमि छपरौली (40 हेक्टेयर) विकासखंड में है तथा सबसे कम अन्य अकृष्य भूमि बड़ौत (26 हे0) विकासखंड में है। तालिका 4 का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2008–09 से 2018–19 के मध्य छपरौली एवं बड़ौत विकासखंडो में वृद्धि दर सर्वाधिक (100þ) रही तथा खेकड़ा विकासखंड में वृद्धि दर ऋणात्मक (–35þ) रिकॉर्ड की गई।

परती भूमि

इसके अंतर्गत वर्तमान परती व अन्य परती भूमि को सम्मिलित किया जाता है। वर्ष 2008–09 में सबसे अधिक परती भूमि बिनौली (1194 हे0) विकासखंड मे थी जो 2018–19 तक घटकर (565 हेक्टेयर) हो गया बिनौली विकासखंड में परती भूमि के क्षेत्र (–52.68þ) में कमी आई है। वर्ष 2008–09 में सबसे कम परती भूमि छपरौली (262 हे0) विकासखंड में थी जबकि वर्ष 2018–19 में सबसे कम परती भूमि बड़ौत (296 हे0) विकासखंड में रिकार्ड की गई है। छपरौली विकासखंड में परती भूमि के क्षेत्र में सर्वाधिक वृद्धि (4.2þ) हुई है।

कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि

इसके अंतर्गत वह भूमि क्षेत्र लिया जाता है जो कृषि के लिए उपयुक्त नहीं है इसमें औद्योगिक संस्थान, सड़के, रेलवे लाइन, जलमार्ग तथा इमारतों के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र सम्मिलित है। जनपद बागपत में वर्ष 2008–09 में इस श्रेणी की भूमि का क्षेत्र सबसे अधिक बिनौली (2818 हे0) विकासखंड में था जो वर्ष 2018–19 तक बढकर (3473 हेक्टेयर) हो गया। इस प्रकार बिनौली विकासखंड में (23.24þ) वृद्धि हुई तथा सबसे कम क्षेत्र छपरौली (1955 हे0) विकासखंड में था जो वर्ष 2018–19 में (10.59þ) बढकर 2162 हे0 रिकॉर्ड किया गया। इस श्रेणी की भूमि में सर्वाधिक वृद्धि बागपत (30.91þ) मे अंकित की गयी।

कृषि योग्य बंजर एवं कृषि अयोग्य भूमि

इस श्रेणी के अंतर्गत उस बंजर एवं कृषि के अयोग्य भूमि को सम्मिलित किया जाता है जिसे कुछ कारणों से खाली छोड़ दिया जाता है। इसे कृष्येत्तर बेकार भूमि भी कहते हैं। जैसा की तालिका 02 से स्पष्ट है कि वर्ष 2008–09 में कृष्येत्तर बेकार भूमि का सबसे अधिक क्षेत्र छपरौली (1273 हे0) विकासखंड में था जो वर्ष 2018–19 में (– 37.94þ) घटकर 790 हेक्टेयर ही रह गया। वर्ष 2008–09

सबसे कम क्षेत्र पिलाना (326 हे0) विकासखंड में था, जबकि वर्ष 2018–19 में सबसे कम क्षेत्र बिनौली (585 हे0) में रिकॉर्ड किया गया है। इस श्रेणी की भूमि में सबसे अधिक वृद्धि पिलाना (82.20þ) विकासखंड में हुई।

शुद्ध कृषित भूमि

किसी क्षेत्र के अंतर्गत विभिन्न फसलों के वास्तविक क्षेत्र को ही शुद्ध बोया गया क्षेत्र कहते हैं। वर्ष 2008–09 में सर्वाधिक शुद्ध बोया गया क्षेत्र बड़ौत (21024 हे0) विकासखंड में था जो वर्ष 2018–19 में घटकर (200067 हे0) हो गया तथा वर्ष 2008 –09 में सबसे कम क्षेत्र खेकड़ा (13385 हे0) विकासखंड में है जो वर्ष 2018–19 में घटकर (13187 हे0) हो गया। इस प्रकार शुद्ध कृषि भूमि के क्षेत्र में इन 10 वर्षों के अंतराल में कमी आई है। शुद्ध कृषित भूमि में सर्वाधिक वृद्धि बिनौली विकासखंड (1.02þ) तथा सर्वाधिक ऋणात्मक वृद्धि बड़ौत (–4.55þ) विकासखंड में रिकॉर्ड की गई है।

समस्याएं

जनपद बागपत में भूमि उपयोग के संदर्भ में कुछ प्रमुख समस्याएं व्याप्त है –

1. जनसंख्या में वृद्धि होने के कारण भूमि उपयोग के स्वरूप में परिवर्तन हो रहा है।
2. कृषि भूमि का उपयोग गैर कृषि कार्यो में करना।
3. औद्योगिकरण एवं नगरीकरण के कारण शुद्ध कृषित भूमि एवं कुल प्रतिवेदित क्षेत्र में कमी आना।
4. कृषि जोतों का आकार निरंतर कम होना।
5. जलस्तर में गिरावट।
6. मानव भूमि अनुपात में निरंतर कमी होना।

सुझाव

जनपद बागपत में जनसंख्या वृद्धि व औद्योगिकरण के कारण भूमि उपयोग से संबंधित अनेक समस्याओं का विकास हो रहा है इन समस्याओं के निराकरण के लिए कुछ प्रमुख सुझाव निम्न है–

1. परती भूमि में तकनीक द्वारा सुधार कर उसके क्षेत्र को कम किया जाए।
2. कृषि भूमि के स्थान पर परती भूमि तथा कृषि योग्य बंजर एवं कृषि अयोग्य भूमि का उपयोग गैर कृषि कार्यो में किया जाए।
3. फसल चक्र अपनाने पर बल दिया जाए ताकि भूमि की उर्वराशक्ति बनी रहे और भूमि को बजंर एवं ऊसर होने से बचा सकें।
4. कृषक प्रशिक्षण को बढ़ावा देना चाहिए।
5. भूमि उपयोग से संबंधित सरकारी स्तर की योजनाओं को पूर्ण रूप से लागू करने पर बल दिया जाए।

निष्कर्ष

जनपद बागपत कृषि की दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र है यहां पर पाई जाने वाली समतल व उपजाऊ भूमि, सिंचाई की सुविधाएं, अधिक जनसंख्या भार, उच्च कृषि तकनीक तथा कृषि आधारित उद्योगों का विकास के कारण भूमि उपयोग के स्वरूप में अत्यधिक परिवर्तन हुआ है। यह एक सघन

कृषि प्रधान क्षेत्र है जिसमें गेहूं चावल एवं गन्ना प्रमुख फसलें हैं जो अधिकतर क्षेत्र में उगाई जाती है। जनपद बागपत में कुल प्रतिवेदित क्षेत्र, शुद्ध कृषि भूमि तथा परती भूमि का क्षेत्रफल घटा है तथा कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि, अन्य अकृष्य भूमि, कृषि योग्य बंजर एवं कृषि अयोग्य भूमि का क्षेत्रफल बढ़ा है, जिसके मुख्य कारण जनसंख्या वृद्धि, नगरीकरण, औद्योगिक विकास एवं विनिर्माण कार्यों में वृद्धि होना है। जनपद में सरकारी योजना एवं जनचेतना के कारण वन क्षेत्र में भी वृद्धि रिकॉर्ड की गई है।

सन्दर्भ

1. तिवारी, आर0 सी0., सिंह, बी0 एन0. (2007). 'कृषि भूगोल प्रयाग पुस्तक भवनः इलाहाबाद. पृष्ठ **75.**
2. हुसैन, माजिद. (2000). कृषि भूगोल. रावत पब्लिकेशन. सेक्टर 3, जवाहर नगरः जयपुर. पृष्ठ **161.**
3. गौतम, अलका. (2009). कृषि भूगोल. शारदा पुस्तक भवनः इलाहाबाद. पृष्ठ **436.**
4. राठौर, हरीश कुमार. (2018). भूमि उपयोग एवं भूमि आवरण का बदलता स्वरूप तथा इसके प्रभावः शाहजहांपुर जनपद का एक प्रतीकात्मक अध्ययन. उत्तर प्रदेश जयोग्राफिकल जर्नल. वाल्यूम 23.
5. कुमारी, अमिता. (2012). कृषि के बदलते स्वरूप का पर्यावरण पर प्रभाव जनपद बागपत का एक भौगोलिक अध्ययन. अनपब्लिशिड. पी0–एच0डी0 थीसिस. चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालयः मेरठ।
6. कुमार, वीरेंद्र. (2013). मेरठ व बागपत जनपद में भूमि उपयोग की गतिशीलता एक भौगोलिक अध्ययन. चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालयः मेरठ।
7. सिंह, बी0बी0. (1988). कृषि भूगोल. ज्ञानोदय प्रकाशनः गोरखपुर. पृष्ठ **14.**
8. जिला सांख्यिकी पत्रिका जनपद बागपत 2010.
9. जिला सांख्यिकी पत्रिका जनपद बागपत 2020.